समाज विकास में सहयोग दें – संपादक की कलम से...

''गोलालारीय दर्शन'' पत्रिका के प्रकाशन को 7 वर्ष पूर्ण हो रहे है गत छ: वर्षों में हमारी पूरी कोशिश रही है कि हर गोलालारीय परिवार के घर समाज का मुखपत्र अवश्य ही पहुंचे। यह पत्रिका साधारण डाक से भेजी जा रही है डाक व्यवस्था के कारण कुछ परिवारों तक पत्रिका नहीं पहुंच पाने का हमें खेद रहता है। कोरियर द्वारा भी पत्रिका भेजने की योजना प्रारंभ की गई है। विगत छ: वर्षों में पत्रिका के माध्यम से समाजजनों को एक मंच पर लाने का सुखद अहसास सदैव हमें और अधिक कार्य करने की प्रेरणा देता हैं। यही हमारी टीम की छोटी सी सफलता है जिसके हक़दार आप भी है। समाज प्रतिभाओं से आपका परिचय कराना, समाज सदस्यों द्वारा आयोजित सामाजिक व धार्मिक गतिविधियों को आप तक पहुंचाने के एकमात्र उद्देश्य के साथ इस पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

धार्मिक कार्यक्रमों की जानकारी के लिए अनेक पत्रिकाएं व कई धार्मिक चैनल चल रहे है परन्तु सामाजिक समाचार व गतिविधियों की जानकारी आप तक पहुंचाने के उद्देश्य से ही ''गोलालारीय दर्शन'' पत्रिका का प्रकाशन कर 4300 परिवारों तक हम नियमित भेज रहे है। गत अंक विवाह योग्य प्रत्याशी विशेषांक को समाजजनों ने काफी सराहा इस वर्ष यह विशेषांक पुस्तक के रुप में प्रकाशित करना चाहते हैं जिसकी तैयारियां जून 2015 से प्रारंभ करेंगे। विशेषांक का प्रथम अंक सिद्धक्षेत्र पवाजी के वार्षिक मेले में प्रस्तुत करने की योजना है, जिसमें आपका सहयोग अपेक्षित है।

8 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष में मातृशक्ति को अपने परिवार के निर्माण के साथ साथ समाज निर्माण में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए प्रण लेना होगा तभी हम सशक्त समाज की कल्पना कर सकेगें। साधर्मी महिलाओं के साथ मिलकर आप क्षेत्रीय संगठन बनाये जिसमें सामाजिक व धार्मिक गतिविधियों के साथ बच्चों व युवावर्ग के उत्थान हेतु कार्यक्रम आयोजित कर उन्हें समाज से जोड़ने हेतु प्रेरित करे। इन कार्यक्रमों की सचित्र जानकारी हमें प्रेषित करें जिसका प्रकाशन से अन्य महिलाएं भी प्रेरणा ले और अपने यहां संगठन बनाकर समाज विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सके।

गत छ: वर्षों में समाजजनों से निरंतर आर्थिक सहयोग प्राप्त होता रहा है परन्तु इस वर्ष कई सदस्यों ने हमें आगे बढ़कर आर्थिक सहयोग प्रदान किया है। हम सदैव उनके आभारी रहेंगे, हमारा आपसे सादर अनुरोध है कि इस पत्रिका के महत्व का आकलन कर विशेष सहयोगी 2100/-, संरक्षक 5100/-, परम संरक्षक 11000/-, शिरोमणि संरक्षक 21000/- का आर्थिक सहयोग प्रदान कर समाज के मुखपत्र गोलालारीय दर्शन के सुचारु प्रकाशन हेतु एक स्थाई फंड बनाने में सहयोग प्रदान करेंगे ताकि पत्रिका बिना किसी व्यवधान के आपके हाथों तक आजीवन पहुंचती रहे। आप कई अवसरों पर आर्थिक सहयोग दे सकते है। परिवार में मांगलिक प्रसंगों पर हम लाखों रुपये खर्च कर देते है। शुभ विवाह के अवसर पर नवदम्पत्ति, वरिष्ठ सदस्यों की 25वीं व 50वीं वर्षगांठ, बच्चों के जन्मदिन के अवसर पर उनके फोटो प्रकाशित करवाकर आप पत्रिका को आर्थिक संबल प्रदान कर सकते है।

शोक समाचारों का प्रकाशन निशुल्क किया जाता है। सदस्य की स्मृति में हम अपने नगर के मंदिर व संस्थाओं के साथ साथ छोटी सी राशि समाज पत्रिका ''गोलालारीय दर्शन'' को देने का प्रण करेंगे तो यह भी एक तरह से समाज को आर्थिक रुप से सशक्त बनाने में आपका योगदान होगा। आज हमारे समाज का हर परिवार उन्नति कर रहा है उसी तरह राष्ट्रीय स्तर पर तीन माह में एक बार प्रकाशित होने वाली पत्रिका भी वर्ष में कम से कम छ: बार प्रकाशित हो सके इसके लिए सम्मानजनक राशि सहयोग के रुप में अवश्य ही प्रदान करें।

– राजेन्द्र जैन 'बागो', इन्दौर

कन्या भ्रूण हत्या के लिए जिम्मेदार कौन ?

विशाल जैन पवा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के समर्थन में बेटी बचाओं – बेटी पढ़ाओं का नारा बुलंद करने के लिए सभी को इस अनूठी पहल को स्वीकार करते हुए बेटा और बेटी के भेदभाव को जड़ से उखाड़ फेंकना है। बेटी सृष्टि का मूल आधार है तथा भ्रूण हत्या सामाजिक कलंक एवं कानूनन जुर्म है।

झलकारीबाई, अहिल्याबाई, दुर्गावती हो या लक्ष्मीबाई, कल्पना चावला, साईना नेहवाल, सानिया मिर्जा, पी.टी. उषा हो या किरण बेदी सभी ने एक बेटी के रुप में ही देश का नाम रोशन किया है। देश का सबसे बड़ा पद, राष्ट्रपति हो या प्रधानमंत्री सभी को हमारे देश की बेटी ने गौरवांवित किया है। इसके बाद भी सीता और राधा की धरती कन्याओं से सूनी होती जा रही है, जो हम सभी के लिए चिंता का विषय है। बेटी के बगैर दुनिया अधूरी है, बेटी प्रतिभा और ममता की मूर्ति होती है। दुनिया का अस्तित्व बेटी पर टिका है, बेटी प्रकृति का मूल आधार है। भारतीय संस्कृति में बेटी को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है, बेटी ही समाज में परिवर्तन लाती है। बेटी भविष्य है बिना बेटी के समाज की कल्पना करना व्यर्थ है। बेटियां बोझ नहीं सहारा होती है। बेटी न रहेगी तो मां, बहन, बहू और पत्नी कहां से आयेगी। बाल विवाह, भ्रूण हत्या एवं दहेज प्रथा जैसी बुराईयों एवं समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करना हमारा दायित्व है। बेटा और बेटी में भेदभाव को दूर करना और समानता का अधिकार देना ही हमारा ध्येय होना चाहिए। महिलाओं के अधिकारों की रक्षा करना ही हमारी प्रथम प्राथमिकता हो। बेटी के बिना घर आंगन सूना होता है, बेटी के अस्तित्व की रक्षा से ही सामजिक मूल्यों की रक्षा होगी।

प्राचीन वेद-पुराणों में पार्वती को शक्ति, धन को लक्ष्मी और विद्या को सरस्वती का रुप माना है, तीनों ही बेटी की पर्याय हैं। बेटी मकान को घर बनाती है, दो कुलों का मान बढ़ाती है। बेटियां कुदरत की धरोहर हैं, बेटी के आगमन पर ही भाग्य के दरवाजे खुलते हैं, औरत ही सृष्टि की जननी है। लेकिन आज की बेटी ही कन्या भ्रूण हत्या के लिए सबसे अधिक जिम्मेदार हैं क्योंकि जब बेटी मां-पिता की भावनाओं का ध्यान न रखते हुए परिवार एवं समाज के विरुद्ध जाकर प्रेम विवाह का कदम उठाती है, ऐसी घटनाओं के डर के कारण ही न जाने कितने माता पिता बेटी को जन्म नहीं देना चाहते है और वे बिना किसी सोच विचार के भ्रूण हत्या जैसा जघन्य कृत्य कर बैठते है।

अहिंसा सेवा संगठन के एक सर्वे में इस बात की पुष्टि हुई कि आज के माता पिता केवल इसीलिए बेटी को जन्म देना नहीं चाहते कि कहीं उसकी बेटी परिवार और समाज की मान्यताओं के विरुद्ध जाकर प्रेम विवाह जैसा कोई गलत कदम न उठा ले। अत: आज की युवा पीढ़ी को यह बात समझना होगी कि किसी के प्यार के लिए जन्म देने वाले माता पिता के प्रेम को भूलकर कभी खुश नहीं रह सकते। प्यार में भटके युवाओं को यह समझना होगा कि आप पर सब कुछ न्यौछावर कर देने वाले माता पिता ने आपके लिए क्या क्या किया है, और जीवन का सबसे बड़ा फैसला लेते समय माता पिता की प्रतिष्ठा और मान सम्मान को भूलकर उनका साथ छोड़ देना सुखद भविष्य के लिए अच्छा नहीं हो सकता है। अत: हम बेटी के संरक्षण के साथ साथ उन्हें संस्कारित भी करना होगा ताकि वे माता पिता की इच्छा विरुद्ध ऐसा कदम न उठाये जिससे उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा प्रभावित हो और उनके मन में बेटियों के लिए कोई गलत धारणा बने। अत: बेटी के संरक्षण के साथ समानता का अधिकार देने एवं समाज में उच्च संस्कारों के निर्माण की जागरुकता फैलाने की शपथ लेना चाहिए।

पत्र सम्पादक के नाम...

* विगत विवाह विशेषांक बहुत उपयोगी लगा। कुछ सुझाव प्रेषित कर रहा हूँ – विवाह योग्य प्रत्याशी के बायोडाटा में कुछ और जानकारियाँ भी जैसे प्रत्याशी की प्राथमिकताएँ (सर्विस क्लास / बिजनेस क्लास), पारिवारिक जानकारी वगैरह भी दी जाये तो अति उत्तम होगा। * प्रत्याशियों को अलग अलग समूहो में (उम्र, योग्यता, व्यवसाय आदि के आधार पर) छापा जाये तो अधिक सुविधाजनक रहेगा।

– प्रवीणकुमार जैन, विदिशा

* मैं गोलालारीय दर्शन के प्रथम अंक से ही इसका नियमित पाठिका रही हूँ। यह पत्र निरंतर प्रगति कर रहा है, इसके लिए बधाई। पत्र में पठनीय रोचक, ज्ञानवर्धक रचनाऐं, पाक विधि, मनोरंजक व शैक्षणिक मार्गदर्शन दें ताकि इससे पाठकों की संख्या और बढ़ सके। बच्चों और युवाओं से संबंधित सामग्री का प्रकाशन भी करें। कुछ स्थाई स्तंभ भी रखे जा सकते है, इससे पत्र और अधिक रुचिकर हो सकेगा। हो सके तो पत्रिका का प्रतिमाह प्रकाशित करे ताकि सामजिक जानकारियाँ निरंतर मिलती रहे।

– नीलम जैन, इन्दौर

कोरियर द्वारा पत्रिका भेजने की व्यवस्था

गोलालारीय दर्शन पत्रिका शासन के मापदण्डों के अनुसार साधारण डाक से आप तक पहुंचाने का हर संभव प्रयास करते है फिर भी कई परिवारों तक पत्रिका नहीं पहुंच पाती है, इस दुविधा को दूर करने के उद्देश्य से हमने मधुर कोरियर के माध्यम से पत्रिका भेजने का विचार करा है। आजीवन सदस्य ही इस सुविधा का लाभ ले पायेंगे। मधुर कोरियर के द्वारा मध्यप्रदेश में 150 रु. प्रतिवर्ष व मध्यप्रदेश के बाहर 200 रु. अग्रिम रुप से जमा करने पर ही यह सुविधा सुनिश्चित की जा सकेगी।

– संपादक मंडल 'गोलालारीय दर्शन'

संपर्क – श्री बाहुबली जैन 9425903301, 9424013136